विहंगम

जुलाई–अगस्त 2017

इ.ग.रा.क. केन्द्र की पत्रिका

Vihangama

The IGNCA Newsletter

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS, NEW DELHI

Theatre, Art & Craft and Photography workshop for children

Front Cover:
Spellbound, a painting by Elizabeth Brunner, IGNCA Archives

July-August 2017

CONTENTS

Chief Editor
Dr Sachchidanand Joshi

Editor
Dr Mangalam Swaminathan

Editorial Assistant
Kritika Mudgal

The opinions expressed in the magazine are those of the authors/ interviewees and IGNCA does not necessarily subscribe to them.

Design & Printed by:
Colourbar Communications
C136, Naraina Industrial Area, Phase-I, New Delhi-110028
Ph.: 98112 18951

2 ऐलिजबेथ ब्रूनर- एक संस्मरण, एक श्रद्धांजलि
~ स्मरण - श्रीमती हिमानी पाण्डे

6 The Supreme Consciousness, the Divine Feminine and the Colours of Creation in Seema Kohli's Art
~ Discovering Art

9 IGNCA signs Memorandum of Understanding with Pondicherry University
~ Collaborations

10 Events at a Glance at IGNCA

12 Kabuliwala: A theatre, Art & Craft and Photography Workshop for Children
~ Workshop at IGNCA - Mrs. Asha Gupta

14 UNESCO's Memory of World Programme
~ National Seminar

15 Akhyan: Masks, Puppets and Picture Showmen in Indian Narrative Traditions
~ Report - Dr. Kr. Sanjay Jha

16 लोकगाथा उत्सव, चित्रकूट
~ उत्सव - श्रीमती लक्ष्मी रावत

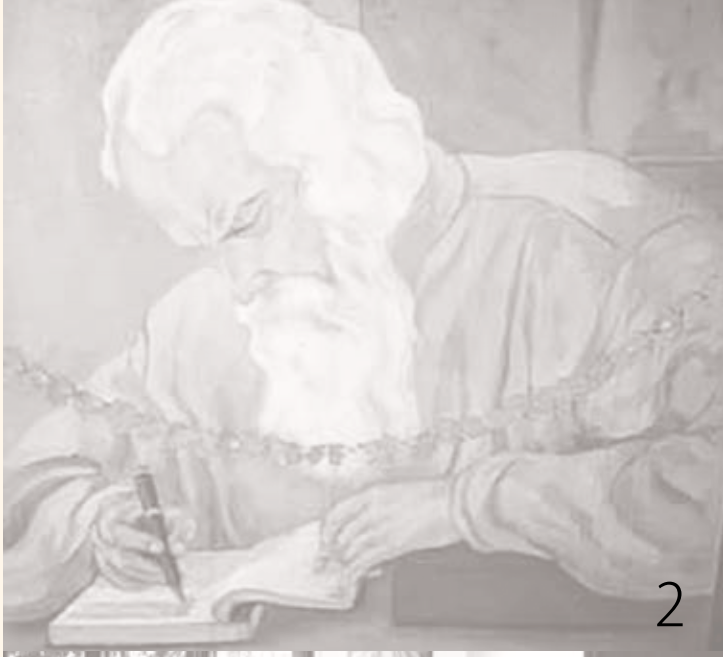

Photo Credit:
All photographs are from the IGNCA Archives/ Photography Unit unless specified otherwise.

स्मरण

ऐलिजबेथ ब्रूनर - एक संस्मरण, एक श्रद्धांजलि

- हिमानी पांडे
सांस्कृतिक अभिलेखागार - कला निधि

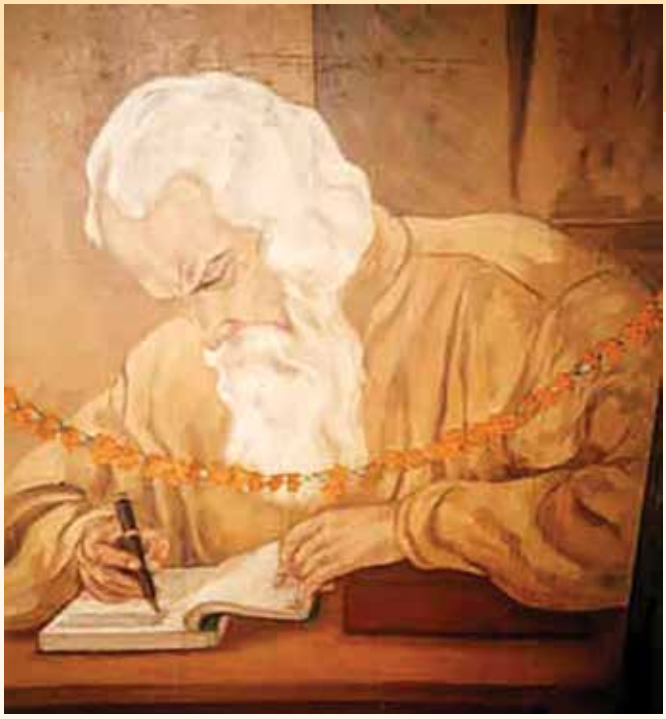

उनके चेहरे पर एक अद्भुत तेज और आंखों में किसी अल्हड़ षोडसी की चंचलता थी। नब्बे वर्ष की भरपूर आयु में भी विनोद और जीवन के प्रति उत्साह ऐसा जो किसी युवती को भी लजा देता। जो भी उनके सम्पर्क में आया–चाहे वह चित्रकार हो, कलाप्रेमी या साधारण इंसान–उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाया। ऐसा अनोखा था उनका व्यक्तित्व। उन्हें देखकर लगता था कि इस विलक्षण महिला ने अपने जीवन के उतार–चढ़ाव, मीठे कडुए क्षणों को भरपूर जीने का प्रयास किया है।

ऐलिजबेथ ब्रूनर का जन्म 1 जुलाई, 1910 में सुदूर हंगरी में हुआ था। माँ–बाप दोनों चित्रकार थे जिनका अधिकांश समय देश भ्रमण कर अपने चित्रों की प्रदर्शनी करते बीतता। साथ में उनकी दस वर्षीय बेटी भी रहती।

एक बार उनके पिता, फेरेन्क सास ब्रूनर ने अपनी बेटी से पूछा–''क्या तुम चित्रकार बनना पसंद करोगी ?'' बेटी ने उत्तर दिया–''नहीं मैं साधारण लड़की ही रहना चाहूंगी।''

विडंबना की बात थी, यही लड़की आगे चल कर एक असाधारण कलाकार बनी जिसने अपने जादुई तुलिका से अनगिनत चित्रों में मानव जीवन और प्रकृति की छटा को साकार कर फ्रेमबद्ध कर डाला। इन्हीं कलाकृतियों द्वारा वह समस्त कला जगत में विख्यात हुई।

किंतु इससे पहले ब्रूनर परिवार के भाग्य में बिखरना लिखा था। प्रथम महायुद्ध की प्रचण्ड ज्वाला से समस्त संसार झुलस रहा था। यूरोपीय देशों में तो वज्रपात ही हुआ था। युद्ध की बर्बरता, मृत्यु और मनुष्य की क्रूरता से ब्रूनर परिवार का संवेदनशील हृदय विचलित हो उठा। पिता फेरेन्क सास ब्रूनर दुखी हो एकांतवास में चले गए। ऐलिजबेथ की माँ, ऐलिजबेथ सास ब्रूनर ने अट्ठाईस दिन तक अन्न ग्रहण नहीं किया। लंबे उपवास के बाद वे विशुद्ध शाकाहारी बन गईं। इसी दौरान आध्यात्म के प्रति उनका विशेष झुकाव हो गया और जीवन के चिर सत्य की खोज पुनः आरम्भ हुई। सन् 1930 में बेटी को लेकर सास ब्रूनर इटली पहुंची। इसी लंबी यात्रा के बीच एक रात बेटी ऐलिजबेथ ने एक विचित्र स्वप्न देखा। स्वप्न में फरफराती श्वेत दाढ़ी वाला एक दिव्य वृद्ध पुरुष हाथ मं दीपक थामे बैठा था। दीपक की लौ हवा में कांप रही थी जैसे अब बुझी, तब बुझी। ऐलिजबेथ ने फौरन भाग कर उस पुरुष के समीप जा अपने हाथों की ओट से दीपक को बुझने से बचा लिया। पुरुष ने दीपक को ऐलिजबेथ के हाथों में थमा कर कहा–''ले जाओ इसे और संसार के कोने–कोने को प्रकाशित कर डालो।''

अगले दिन ऐलिजबेथ ने अपना स्वप्न माँ को सुनाया और मां ने मित्रों को। एक सज्जन गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बारे में पढ़ चुके थे और किसी पत्रिका में उनकी फोटो भी देखी थी। उन्होंने संकेत दिया–''आपकी बेटी ने जिस दिव्य आकृति का वर्णन किया है, वे हो न हो गुरुदेव ठाकुर ही हो सकते हैं।''

तभी सास ब्रूनर ने गुरुदेव को हंगरी की भाषा में पत्र लिख डाला लेकिन पता नहीं होने के कारण लिफाफे पर केवल ''टेगोर इंडिया'' लिख भेज दिया। आश्चर्य की बात तो यह थी कि पत्र यथा–समय अपने ठिकाने पर पहुंच गया और दो

महीने के बाद उसका उत्तर भी और वह भी हंगेरियन भाषा में। गुरुदेव ने उन्हें शांति निकेतन आने का निमंत्रण भेजा था।

जब माँ–बेटी गुरुदेव की तपोभूमि, शांति निकेतन पहुंचीं तो स्वप्न वाले वही दिव्य पुरुष उनके स्वागत हेतु खड़े थे।

''आखिर तुम आ ही गईं,'' गुरुदेव ने कहा और उसी दिन से माँ बेटी के जीवन का दूसरा अध्याय शुरू हो गया।

गुरुदेव के प्रोत्साहन से दोनों ने भारतीय परिवेश, प्रकृति और कला कि विविधता का गहन अध्ययन किया। इसका प्रभाव उनकी कलाकृतियों पर पड़ा और जन्म हुआ एक नूतन शैली का जो उनकी कलाकृतियों में साफ झलकती है।

कहते हैं जैसे–जैसे इंसान बुढ़ापे के सोपान पर चढ़ता है, वैसे–वैसे बीते वर्षों की परतें उसकी स्मृतियों को भी ढंकती चली जाती हैं। किंतु ऐलिजबेथ 85–90 की उम्र में भी जिस स्पष्टता से अपने संस्मरण सुनाती थीं, लगता था मानो कल ही की बात हो। शांति निकेतन के दिनों की एक घटना सुनाने में उन्हें बहुत आनन्द आता था।

''एक दिन मैंने गुरुदेव को अपने आवास 'उत्तरायण' में मेज पर काम करते देखा। कमरे में बैठे वे कविता लिखने में तल्लीन थे। लगता था जैसे कविता की पंक्तियां उनके मन में रूप लेकर स्वतः कागज पर उतरती जा रही थीं। इस अविरल लेखनी के क्षणों को चित्रित करने के लालच में मैं चुपचाप उनकी खिड़की के बाहर चित्र बनाने लगी। सहसा उनकी नजर मुझ पर पड़ गई। पल भर को उनके मुख पर झुंझलाहट मुस्कान में बदल गई। समीप आकर चित्र देखा और आश्चर्य से कहा–''तुमने तो वास्तव में मेरा सही चित्रण कर डाला है।'' गुरुदेव ने मुझसे कहा–''कई चित्रकार मेरे सैकड़ों चित्र बना चुके हैं पर सही मानों में जो तुमने बनाया है वही मेरा असली चेहरा है।''

कुछ ऐसा ही अनुभव ऐलिजबेथ का महात्मा गांधी के साथ भी हुआ। अपने एक संस्मरण में वे लिखती हैं–''एक बार मैं गांधी जी के निवास पर पहुंच गई। भीड़ को चीरती हुई जब मैं और माँ उनके पास पहुंचे तो वे हमें देख कर खुश हुए। उनकी मुस्कान से प्रोत्साहित हो मैंने आज्ञा मांगी, ''आपका चित्र बनाना चाहती हूँ।'' गांधी जी ने पहले इंकार कर दिया। मैंने फिर साहस जुटा उनसे आधे घण्टे के समय के लिये याचना की तो उन्होंने कहा–''मुझ जैसे बदसूरत आदमी का चित्र बना कर क्या करोगी''? हाजिर जवाब ऐलिजबेथ ने कहा–''मैं आपका नहीं, आपकी अंतरात्मा का चित्रण करना चाहती हूँ''। ''तुम्हारा मतलब है कि तुम जैसी छोटी लड़की आधे घण्टे में मेरी अंतरात्मा का चित्र बनाएगी''? खैर गांधी जी ने इस चिरौरी के बाद मुझे आधे घण्टे का समय दे दिया।

अगले दिन हम ठीक समय पर पहुंच गए। साथ में एक बड़ा कैन्वस ले गई थी। गांधी जी जैसे महान व्यक्ति का चित्र छोटे कैन्वस में कैसे समाता ? उस दिन गांधी जी ने मौन व्रत धारण किया था। मैंने सामान तैयार कर शीघ्र चित्र बनाना शुरू किया। न जाने कब समय निकल गया पर चित्र पूरा नहीं हुआ। गांधी जी ने एक पुर्जी भिजवाई जिसमें लिखा था, ''आधा घण्टा खत्म हो चुका है।'' तैयारी में दस मिनट लगे थे तो उसी का वास्ता देकर मैंने दस मिनट की और मोहलत मांगी और जल्दी से चित्र समाप्त किया। मेरी जिद और लगन देख बापू मुस्कुरा दिये।

जिस व्यक्ति का भी वे चित्र बनाती उसका चरित्र आंकलन केवल एक नजर में कर लेने की उनमें अद्‌भुत क्षमता थी। ऐसा

लगता जैसे वह चेहरे का नहीं बल्कि व्यक्ति की अंतरात्मा का आंकलन कर रही हों। ध्यान से देखें तो इस सत्य की स्पष्ट झलक ऐलिजबेथ के चित्रों में नजर आती है–चाहे चित्र गांधी जी का हो अथवा किसी दस्यु सरगने का।

मुझे याद है एक बार ऐलिजबेथ मुझे अपने चित्रों का एलबम दिखा रही थीं। सहसा मेरी दृष्टि एक चित्र पर ठहर गई। एक योगी समान सुन्दर पुरुष का चित्र था। लम्बे घुंघराले केश, बड़ी आंखें, लम्बी नासिका और चौड़े ललाट वाले व्यक्ति को पहचानने में मुझे देर लगी क्योंकि यह उसके यौवन का चित्र था। मैंने उस व्यक्ति को जब देखा तो वह लगभग 55–60 वर्ष का था। और इस तेजस्वी साधूरूपी चेहरे के पीछे छुपा था एक प्रपंची व्यक्ति जिसने अपने व्यक्तित्व के बल पर ही मेरे एक परिचित परिवार को बड़ा धोखा दिया था। इस ढोंगी पुरुष को ऐलिजबेथ जैसी दिव्यात्मा ने भला क्यों चित्रित किया ? मैंने उनसे पूछा। ऐलिजबेथ का चेहरा हठात् गंभीर हो उठा। भवें तान कर उन्होंने कहा, ''उफ्फ, यह वास्तव में एक दुष्टात्मा था। मैंने इसे एक चित्रकार की दृष्टि से देखा तो उसकी आंखों से बहुत प्रभावित हुई। अजीब आकर्षण था उसकी आंखों में–परन्तु आंखें थीं शैतान की। वह मुझे नैनीताल में साधुवेश में मिला था। जानती हो उसकी शैतानी आंखों का मुझ पर क्या असर हुआ ? इन आंखों का चित्र पूरा करते ही मैं सख्त बीमार हो गई।''

मैं विस्मित हो उठी। जिस व्यक्ति के बाह्य रूप से प्रभावित हो, मेरे परिचित परिवारजनों को उसका छल सब कुछ लुटा देने के बाद समझ आया उसे ऐलिजबेथ की दिव्य दृष्टि केवल एक चित्र बनाने में ताड़ गई।

अपने भारत भ्रमण के दौरान ब्रूनर माँ–बेटी उत्तरांचल के दूरदराज पर्वतीय क्षेत्रों में विचरती रहीं। बैजनाथ और कौशानी से उन्होंने हिमालय के कई चित्र बनाए। पहाड़ों से उनका विशेष लगाव रहा चाहे वह कंचनजंगा हो, जापान का फूजियामा अथवा हिमालय। सन् 1935–36 में मां–बेटी विश्व भ्रमण पर निकल पड़ीं। जहाँ भी गईं उनके भारतीय अनुभव चित्रों की बड़ी प्रशंसा हुई। यह एक रहस्यमय देश की कला संस्कृति का अद्भुत प्रदर्शन था–जो विदेशियों के लिये एकदम नया प्रयास था।

अमरीका, जापान और अन्य यूरोपीय देशों का दोनों माँ–बेटी ने दो वर्षों तक भ्रमण किया किंतु एक बार फिर नियति दोनों को पुनः भारत ले आई। इस बार माँ ने नैनीताल में बसने का मन बनया और यही बस गईं। एक बार अपने देश लौटने की इच्छा हुई किंतु इस बार द्वितीय महायुद्ध शुरू हो चुका था। मां–बेटी फिर कभी न लौट पाईं और न ही फेरेन्क सास ब्रूनर से दुबारा भेंट हुई। सन् 1950 में माँ का देहान्त हो गया और ऐलिजबेथ

अकेली रह गई। यह दौर उनके बौद्ध धर्म और कला के प्रति अर्पित होने का था। ब्रूनर का परिवार नहीं रहा किंतु उनके स्नेहिल स्वभाव और अद्वितीय प्रतिभा के कारण उनके कई मित्र थे, कुछ प्रभावशाली और कुछ एकदम साधारण लोग। पंडित जवाहरलाल नेहरू, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी और डा. कपिला वात्स्यायन जैसे कला प्रेमियों ने ब्रूनर और उनकी कला की कदर की। अंत में वे दिल्ली में बस गईं।

मेरी ऐलिजबेथ ब्रूनर से पहली भेंट सन् 1969 मं वसंत पंचमी के एक उत्सव में हुई। उसके पश्चात, इंन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जहां मैं कार्यरत थी, किसी न किसी कार्य हेतु उनसे मेरा सम्पर्क बना रहा। इंन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की सदस्य सचिव एवं आचार्या डॉ. कपिला वात्स्यायन की वे अनन्य मित्र रहीं और उन पर उनका अटूट विश्वास था। शायद इसीलिये वे अपनी 600 से भी अधिक चित्रों का संग्रह इस संस्था के नाम विरासत में दे गई।

ऐलिजबेथ की दिनचर्या अपने निवास की बैठक में ही सीमित रहती। वही उनकी बैठक थी और वह ही उनका शयन कक्ष। वहीं निवास रहता उनके कई कुत्तों का जिन्हें उनकी पनाह मिलती।

लोगों से मिलना जुलना, जलपान, थोड़ा अध्ययन, चिंतन और विश्राम–सब इसी कमरे में होता था।

अन्य कमरों में थीं उनकी और उनकी मां की जीवन भर की साधना–उनकी कलाकृतियां जिनकी प्रदर्शनी उनके जीवन के अंतिम दिनों तक होती रही। गिरते स्वास्थ्य के बावजूद वे येन केन प्रकारेण अपनी व्हील चेयर में अपनी हर प्रदर्शनी

में सम्मिलित होने अवश्य पहुंचतीं। उनके मित्र, हंगेरियन सांस्कृतिक केन्द्र के भूतपूर्व निदेशक, डॉ. गेजा बैथलैनफाल्वी साये की तरह उनके साथ रहा करते थे।

जीवन के लम्बे सफर ने उन्हें अनजाने लोगों के प्रति संदिग्ध बना डाला था। कई कटु अनुभव उनका हृदय कचोटते थे। मैंने भी अपनी पहली भेंट में इस झिझक का एहसास किया पर धीरे–धीरे यह झिझक स्नेह में बदल गई।

एक दिन जब उन्हें पता चला कि मैंने उपवास के कारण चाय नाश्ता लौटा दिया तो उनकी आंखें न जाने क्यों भर आईं–कदाचित अतीत याद आ गया जब उनकी माँ ने विश्व युद्ध से उपजी हिंसा और वेदना से विरक्त हो उपवास किया था। कुछ देर बाद संभल कर उन्होंने मुझे अंदर के कमरे में जाने का आदेश दिया। यह उनका एकदम निजी कक्ष था जिसमें धूल धूसरित–कुछ पूरे, कुछ अधूरे चित्र टंगे हुए थे।

''अंदर आओ और बापू का नमन करो'', उन्होंने कहा।

समने ही दीवार पर गांधी जी का एक विशाल चित्र टंगा था। चित्र में अपनी चिरसंगिनी लाठी ले वे जैसे तेजी से चलते हुए चित्रित थे। ऐसा लगता था जैसे अभी अभी वे कदम बढ़ाते फ्रेम से बाहर आ जाएंगे। कुछ देर मैं तस्वीर के सामने हाथ जोड़े खोई सी खड़ी रही। चित्रकार से भी महत् थी विषय की विराटता। एक विचित्र आत्मशुद्धि का एहसास हुआ और आनन्दमय गर्व–ब्रूनर जैसी हस्ती भी स्नेहास्पद दृष्टि के चक्रव्यूह भेदन का।

ऐलिजबेथ के संस्मरण और उनकी बातों में जीवन के छोटे बड़े दर्शन–संवाद मेरे लिये किसी गुरुवाणी से कम न थे। पर उनके साथ बिताए गए कुछ अनमोल पल वेदनापूर्ण भी थे। जीवन के अंतिम कुछ वर्षों में जिन कलात्मक अंगुलियों ने न जाने कितने अपरिचित चेहरों को परिचित बनाया था, हिमालय के शिखरों की ऊंचाई, झील–नदियों की गहराई, घने जंगलों की निस्तब्धता, आशा–नौराश्य, जीवन की ज्वार–भाटा और हिन्दू,

बौद्ध, यीशू धर्म संस्कृति को अपनी अमर कला कृतियों में सा. कार कर डाला था, आज आयु और संधिपात से पतझड़ वृक्ष की शुष्क टलनियों के समान हो चुकी थीं। इन अंगुलियों में अब चाय की प्याली को स्थिर रखने की क्षमता भी नहीं थी।

ऐलिजबेथ एक महान कलाकार ही नहीं, एक महान एवं सहृदय महिला थीं। उनसे मेरी अंतिम भेंट उनकी अंतिम यात्रा से कुछ महीने पूर्व हुई थी। फूलों का गुलदस्ता ले कर मैं जब उनके पास पहुंची तो देखा कि उम्र का साया गहरा चुका था। गत एक वर्ष से बोलने की शक्ति भी क्षीण हो चली थी।

फूलों को देख मेरे हाथ पकड़ बिस्तर पर लेटे उन्होंने अस्फुट स्वर में कुछ कहा जिसे मैं समझ न सकी, पर उनकी मुस्कराहट से समझ आया कि फूलों ने अपना काम कर दिया। फिर हठात् कुछ गुनगुनाने लगीं–अपनी मातृभाषा में। सेविका मारिया ने कहा–''यह हंगरी का लोकगीत है। आज वे बहुत खुश हैं।''

सन् 2001 में जब उनके देहान्त का समाचार मिला तो विश्वास ही नहीं हुआ। पिछले वर्ष ही तो दिल्ली में बहुत बड़ी प्रदर्शनी उनके चित्रों की हुई थी। कई मंत्री, कला क्षेत्र के दिग्गज और कला प्रेमियों ने ब्रूनर को बधाई और सम्मान दिया था। व्हील चेयर में बैठी ब्रूनर बढ़ती भीड़ के बीव कहीं खो सी गईं। मैंने दूर से ही उनका प्रफुल्लित मुख देख कर संतोष कर लिया। उस दिन उनके निकट जाना कठिन लग रहा था। नब्बे वर्ष की ब्रूनर किसी छोटी बच्ची की भांति लग रही थी। जिसे उसका मनचाहा खिलौना मिल गया हो।

उनका यही स्मित मंडित मुख मेरे हृदय पटल में सदा के लिये अंकित रहेगा।

The Supreme Consciousness, the Divine Feminine and the Colours of Creation in Seema Kohli's Art

Ms Seema Kohli is a contemporary Indian Artist based in Delhi. Her creative repertoire is eclectic, encompassing a wide range of mediums ranging from painting, murals, experiential installation performances, films to installations, sculptures and each a unique expression of her style. She has been practising for 35 years and has had over 30 solo shows in places including Venice, Brussels, Melbourne, London, New York, Dubai, Singapore Delhi, Mumbai, Hyderabad, Bangalore. She has participated in International Biennales (Venice, Shanghai, India), Art fairs (Hong Kong, Basel, Beijing, Madrid, India) and her work can also be seen in the public realm as murals of 10' x 100' at the T3 Delhi International Airport, Mumbai International/Domestic Airport, the Defense Ministry, Tata Residency, Manipal University, ONGC, Tata Center of Excellence, Park Hyatt, Chennai, Lila Hotel-Delhi, Bangalore among others. She has received the Gold at Florence Biennale 2009,1 Premio "Video, the YFLO Women Achiever's Award, the LKA Lifetime Achievement Award for Women in 2008. She met with Ms Kritika Mudgal at her studio in Rajender Nagar and answered some questions for Vihangama.

Q. You refer to yourself as a self-taught artist- what was your journey like? How important do you think an institutionalised education in art is?

I have an institutional background- I went to South Delhi Polytechnic and did an Applied Arts course for 3 years, before that I studied Philosophy (Hons.) at Miranda House. Even before my institutionalised training, I felt I was an artist. I was experimenting: as a 13 or 14-year-old I was already painting on upstretched canvases with my oil paints, though I didn't know how to go about it. My journey was very interesting even before I joined an institution and that is the reason I call myself a self-taught artist; because as an artist even to understand the mediums and use the mediums is very very individual. Each artist must use the medium to his advantage.

We are not a *gharaana*. As an artist we walk a very individual path. Our minds are totally our own; we create our own universes according to our own imaginations or fantasies or philosophies or ideologies. Which is why I always felt that I was more of a self-taught artist even if I went to an institution. I feel institutions are very important as long as they give us a chance to explore mediums- they are the places to be introduced to the mediums.

But in today's day institutions can also be your USP, your way or stepping stone into the art world and your way to connections which is something I did not want to use.

Q. Your central theme and a constant exploration in your works- Creation, harmony between the male and female, the Golden Womb is very intriguing. Could you please share your ideas around these themes?

It is really complex and very simple at the same time. From the very beginning I have been working on the concept of the feminine and inspite of the feminine the balance of gender. The idea of gender comes on a much lower kind of hierarchy in my mind. For me everything is feminine. Everything has emerged from the feminine. Due to different compositions, the feminine has worn an outer garb of so many different beings. The simple mythological story of *Saraswati*, tells you so many different things. She moulded the self into so many different forms, each a complete whole- and that is how we believe that the creation of different beings took place. So, for me, everything emerged from the feminine.

Why was this form that came from the Supreme Consciousness feminine? Because only the feminine had the power to create- it had a womb, a *garbh*. And the moment that *garbh*, the feminine wants to expand; because it will expand, everything feminine will expand- breath will expand, vision will expand- I am talking of the sensibilities. Everything that is expanding has a womb, has a power to create. Now when this expansion is taking place, that expands into various beings and various elements, which are also nature: animals, reptiles, fishes, male or female.

As a woman I am not different, I am as equal as a man, as equal as a duck or a fish. I am not greater just because I have taken the form of a woman. My idea of the feminine is different from the "woman." The woman is a part of the Divine Feminine, and the Divine Feminine is Giving. The only aspect we have of that Divine Feminine is that

we have been blessed with the same physical attribute of Creation or Womb. Now if as a woman, we respect that idea of constant expansion- an expansion of mind, of body and different bodies- we become a part of that. If we constrict ourselves, we become an attribute of something else, of another element; it can be a male, a female, a bird or a reptile, anything.

I did an installation called *Ouroborus* in which I dealt with the idea of *84 lakh yonis*.

Some 25 years back, a pundit/pujari was explaining a Yajur Veda mantra to me:

"Om Hiranyagarbha samavartatagre bhutasya jatah patireka asita|

Sa dadhara prithivim dyamutemam kasmai devaya havisha vidhema||"

He explained there is One Supreme Consciousness,which is nither male or female, it's a composite amalgamation of both, it is Aradhnareshwar that has the Golden Womb or the *Hiranyagarbha*, which holds multiple universes, galaxies in its lap. It is constantly procreating- generating, re-generating, positively recycling everything! You can imagine, as an artist, it is such a wonderful concept. It still gives me goosebumps everytime I talk about it. I then read the Garbha Purana, and other texts- wherever there was a mention of the *Hiranyagarbha* I read it, be it in the Upanishads or anywhere else. For me studying scriptures, philosophies, different ideologies is my main source, or it is my method of satisfying my hunger. That is when I recognised that the texts were referring to *Surya* which we constantly revere. Rig Veda mein, Sama Veda mein, har jagah, *Surya ko hi unhone Hiranyagarbha kaha*. It is never ending; it is constantly procreating. Now when I was working, the Divine Feminine wanted her space in it! There was a constant struggle between my Divine Feminine and *Surya*. I was still seeing *Surya* as a male form, I was not seeing it as *Ardhanarishvara*, I was not seeing it as a composite form. Somewhere down the line, because of my own training, for various reasons, I could only see *Surya* only as a male form.

The *Hiranygarbha* has caught hold of me, it does not let go, I have been working with this concept for many years now. It fascinates me, the dance of life is happening everywhere, in everything I see. It is so beautiful, it has its own rhythm, spontaneity, it has its own breath, it has its own span of life, and then it does not end there, it comes back again as life! So this is the feminine form for me.

Q. How do you think the artist has the power to alter perceptions or break the status quo in society?

An artist can only be a fragrance. I cannot be a messenger; I should not be a messenger. Everyone's belief is different. What is good for me may not be good for you; what you believe in may not be my belief, but the idea of love is universal. Love is intrinsic. I do not want to enter a space in which I become a messenger or where I'm trying to motivate people to do something.

I am happy being a *Khoji*, I want to be a *Khoji*. I want to be a person who is constantly inquisitive. The idea of love however, is something that is intrinsic to everybody, and I want to give that. I have nothing else but that. I can just say we are all the same; we come from the same womb. The whole idea of my work is that we share the same space. *Hum ek hi garbh se upje hain, humara ek hi stotra hai.*

Q. Other than your spirituality, do you subscribe to any formalised faith?

Formalised faith… I am born in a Hindu family, so I understand it. Sikhism is another faith, which inspires me a lot. When we were growing up, my grandfather's best friend, who is like my closest friend my Master my guide, has a great influence. He is one of the people I have been closest to- he was a Sikh.

I think as an Indian we are so blessed to understand different faiths, to be able to incorporate them in our lives subconsciously. Even for that matter, Sufism… My parents came from Greater Punjab, the verses of Sufis were ingrained in our system while growing up- Bulle Shah, Baba Fareed, Rumi, they were always there.

I also relate to Tantra. I am already in the process of doing a project on the 64 Yoginis. Of those 64 yoginis the imagery of some of these Yogini's already exist in the temples and I created the others. Energy is constantly multiplying; in any form- the yoginis are the carriers of energy.

Q. Could you share a bit about your painting process/ technique?

My work is a lot of storytelling, a lot of elements. It is like

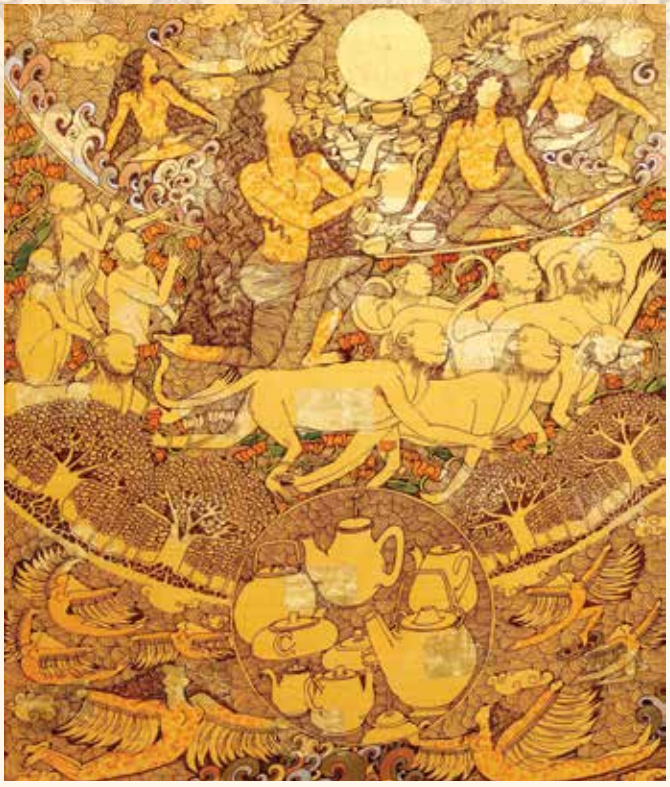

chanting; it is my symbolism. I started making borders; it is more of a meditation before starting the painting. To some people it is decorative, which is fine. For me it is my meditation. A lot of artists make rough drafts, they plan, but for me there is no plan. I just start with a simple prayer of *Guru Shukra Vigneshwara Namah:* Let the Lord of luxuries and the Lord of Intellect come together and reside on my canvas.

This is a small prayer that I do and with that I start, first with silver leafing on my canvas. After the silver leafing I deoxidise it. After that I start with my washes. Those washes are for me, layers of sub consciousness. There are 10-15 washes and then you cannot see through to the silver after that. *Jo andar ka aks hai who nazar hi nahi aata hai.* People ask me then what is the use of using silver? Maybe there is no use for them, but there is for me. I am telling a story, this is my story, and the story of each and every canvas starts like that. It has to delve deep in my sub conscious. It has got to go there; my story has to go to the deepest layer of silver; probe there, scratch there and build out something from there. Everything becomes a process for me.

Q. What about your performative art? How did you come to be a part of your installations?

At some point or another, all children love to mimic, look at themselves in the mirror, and narrate their own stories to themselves. I've been a great believer in myself- I could believe I could be this or that, I could be a lot of things.

But other than that, as I said, for me each canvas has a life. The images in the canvas talk to me, I talk to them. Sometimes when I really enjoy an image, or a symbol or a story, I want to be a part of it. It is in my dialogue with them, my stories and symbols that I get the suggestion of doing, say a sculpture. There are times when these images got compelling. They demand a medium if not a sculpture, then a 3D painting, an installation or simply take me into an experiential performance.

Sometimes, I get caught up. The form demands movement. I want to move, I want to be you. Now how do you make a line move? That's a difficult prospect. I like to give in to that demand, and that's how my mediums have come about- when they have demanded a certain life out of me, a different dimension that they want to enter. After all, as I work, I am entering a different dimension too. I enter a single sheet or a canvas and I become this line. But when this line wants to enter a different dimension of movement, how do I do it? That is when my performance comes about. That's the reason I always call it an experiential performance. Again it's not something that I plan and do. It is spontaneous.

Q. What is your favourite medium?

As a child it was the pencil I would endlessly write and draw everywhere. Line, is my favourite still. Sculptors might see their art in different mediums- they might be fascinated with, say rocks, other objects like stone or wood, similarly for me it is the line. I really like that mystery of the movement. Sometimes it happens that you are envisioning something in a certain way and it takes a completely different form- that is also very interesting to me.

Q. Are there any contemporary artists that you admire? Do you have any favourites?

I do not have any favourite contemporary artists, they might be my friends and I might admire what they are doing though. I do admire a few artists like Luis Borges, Grayson Perry,; there is also Somnath Hore, KG Subramanium in the Indian context, but I can't say that any one "inspired me" or they are my favourites.

Q. What are your lesser known talents or hobbies?

I will be honest; it is very difficult for me to break out of being an artist. But umm…I write. I am a mother, I love being a mother, even though my kids have now grown up. That is one creation of mine, which has also expanded and has its own mind and their own ideas, existence.

I love to travel! You just have to tell me and I'll pack my bags and go.

IGNCA signs MoU with Pondicherry University

Officials from IGNCA and Pondicerry University at the MoU Signing

The Pondicherry University and Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi are pleased to announce their collaboration in doing joint research activities of mutual interest on reciprocal basis, and exchange of information and publication on the successful completion of research of the research project(s). In this regard, Pondicherry University and Indira Gandhi National Centre for the Arts, New Delhi signed a Memorandum of Understanding (MOU) in the Executive Council Hall of the university in the presence of many Deans of the Schools, Heads of the Departments, faculty members, and research scholars.

Prior to signing the MOU, Prof. Anisa Basheer Khan, Vice Chancellor (officiating) gave a brief introduction about the university and the facilities available for teaching and conducting research in different areas. Then Prof. Sachchidanand Joshi, Member Secretary gave a detailed account of works done and doing by the IGNCA for the understanding of the faculty members. Prof. Sachchidanand Joshi highlighted the historical significance of the MoU.

This collaboration will allow IGNCA to leverage on Pondicherry University's know-how, technological and expertise in documenting, preserving and disseminating cultural and heritage information to reach wide audience. This MOU also provides an opportunity to conduct intensive research in art and culture, heritage, history, anthropology, manuscriptology, performing arts and their applications in education and research of all levels. For both institutions, the collaboration is significant as it symbolizes the fusion of culture, heritage and technology.

EVENTS AT

At the MoU signing between Pondicherry University and IGNCA.

The IGNCA Officers and staff celebrating International Yoga Day

Hon'ble MoS for Culture and Tourism (IC) Dr Mahesh Sharma addresses the audience at Rashtriya Sangoshti under IGNCA's Bharat Vidya Prayojana series.

Prof Anjali Gupta, Vice Chancellor, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur visits IGNCA

Workshop cum Performance on Nagpuri Dance at the Eastern Regional Centre in Ranchi

Prof. Amisa Basheer Khan, VC, Pondicherry University at the Conservation Unit, IGNCA

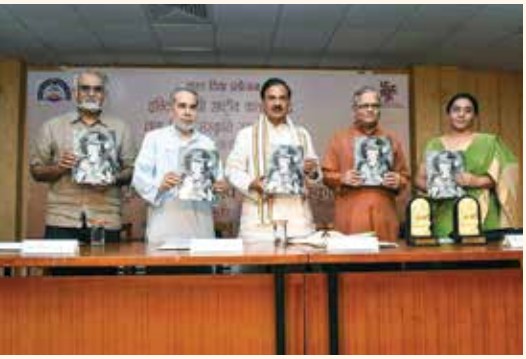

Release of the previous Vihangama issue at the Rashtriya Sanghosti programme

A MoU was signed between IGNCA and Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting.

Pandit Raghunandan Panshikar performs at the 8th Bhinn Shadaj Concert. He is accompanied by Pandit Vinod Lele and Dr Vinay Mishra

A GLANCE

Dr Harendra Prasad Sinha during his lecture on "The Archaeological Remains of Jharkhand" at IGNCA's Eastern Regional Centre in Ranchi

Hon'ble Chief Minister Trivendra Singh Rawat of Uttarakhand releases IGNCA publication Ramman: Religious and Ritual Theatre of Garhwal

Library of Humans at IGNCA

Colours of Darkness in collaboration with Blind New World

Release of Mann ki Baat: Radio Par Samajik Kranti at the discussion event

Release of Gandhian Ila Bhatt's book Anubandh: Sau Meel ke Daayre Mein by Shri B.P. Singh, Former Governor of Sikkim

Shri Ram Bahadur Rai, President, IGNCA Trust addresses the audience at a Book Launch event

Member Secretary, IGNCA discusses future collaborations with Major General Gupta, Chairman, INTACH and Dr Saryu Doshi, Trustee IGNCA and other officials.

Shri Yatindra Mishra reads from the book Lata: Sur-Gatha celebrating Lata Mangeshakar's contribution to music and playback singing.

Workshop at IGNCA

Kabuliwala: A theatre, Art & Craft and Photography Workshop for Children's

Ms. Asha Gupta - Ms. Gunjan Verma

IGNCA organized a workshop entitled- Kabuliwala on theatre, Art and Craft and Photography, for children of various age groups. The purpose of the workshop was to bring together children from various institutions, to propagate and acquaint them with Indian Culture, to give hands on training, to enhance skills and to bring out the creativity of the children through education and entertainment. The workshop was conducted under *Bal Jagat- A Children's Library* and inaugurated by Dr. Sachchidanand Joshi, Member Secretary, IGNCA. In his keynote speech he emphasized on the importance of Indian Culture and the need to preserve it through various Art forms.

The workshop was organized by the Kalanidhi Division under the supervision of Dr. P.R. Goswami, Director (Library and Information) and his team comprising Ms. Asha Gupta (Library & Information Officer), Ms. Safia Inam Al Kabir (Library & Information Officer), Ms. Yati Sharma (Assistant Library and Information Officer), Mr. B.S. Rana (Library and Information Assistant) and Mr. Gajaraj (MTS).

Each day the workshop began with the *Mangalacharan* by Pandit V.P. Mishra (Associate Professor), followed by a yoga session by Ms. Asha Gupta (Library & Information Officer).

More than 45 children from Arya Anathalaya, Dayaganj, Bachpan Bachao Andolan, Jaipur, participated in the workshop many also got to know about the workshop through the advertisement on the website and came to participate.

Kabuliwala- A Theatre workshop was jointly organized by IGNCA and BOOKAROO from 15th to 19th May, 2017. It was a theatre workshop for children between 6 and 12 years. It focused on storytelling, traditional indoor games, folk tales etc.

The Art and Craft workshop was conducted under the guidance of Mr. Vishnu (Lab Assistant, Cultural Archives), supported by Ms. Gunjan Verma (Project Assistant) for the children between 10 to 15 years at Svasti Bal Jagat-Children's corner, C.V. Mess from 22nd to 26th May, 2017. It focused on the making of art objects using clay and papier mache, mask making using waste newspaper, paper marbling, drawing and painting etc. An activity on 'Bridge Making' using straws was conducted by Ms. Vinita Srivastava, Joint Secretary, IGNCA and was appreciated and enjoyed by the children.

The Photography workshop was conducted under the supervision of Mr. D.N.V.S Seetharamiah (Sr. Photography Officer) for the children 12 to 17 years. The workshop was conducted at Svasti Bal Jagat and the Photography Unit at 11, Mansigh Road from 29th May to 2nd June, 2017. The workshop focused on the history of photography, basics of photography, techniques of photography, practical demonstrations and hands on training. A session on Photography was also taken by Ms. Vinita Srivastava, Joint Secretary, IGNCA and Mr. Jitender Chauhan (Conservation Unit).

In adition, a visit to the Library, Media Centre and Raja Deen Dayal Gallery at IGNCA was also conducted for the children.

Apart from the above activities, children were also shown educational movies like- *Balty Boy*, *Swachta Devattava- Ek Samaan* and *Ghatotakacha*.

The workshop ended with short skit, singing and poem recitations by the participants. Feedback was collected by the participating children and prizes were distributed for their creativity and excellence in the workshop.

Ms. Himani Pande (Archivist), Mr. Shiv Shankar Sharma (Senior Carpenter), S&S Section, Accounts Department and Media Centre also played a vital role in the workshop.

National Seminar

UNESCO's Memory of World Programme

Dr. Kr. Sanjay Jha

A two-day National Seminar, Workshop cum Orientation Programme was organised alongwith an Exhibition as part of Public Awareness and Capacity Building for UNESCO's Memory of World (MoW) Register Programme. This was done by the UNESCO Cell of IGNCA's Kala Nidhi in association with Bharat Adhyayan Kendra, Banaras Hindu University, Varanasi on 24-25 March, 2017.

The National Seminar was inaugurated by the Prof. Yadunath Dubey, Vice-Chancellor, Sampuranand Sanskrit University, Kashi in the gracious presence of the Prof. Rajnish Shukla, Member Secretary, Indian Council for Philosophical Research, New Delhi in the Abhinav Bhavan of the Bharat Adhyayan Kendra on 24 March. The programme mainly focused on the Documentary Heritage of the Museums, Archives, Libraries and private collections of three states i.e. Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Bihar and it was attended by the archivists, librarians and curators etc. The second part of the programme was the **Workshop cum Orientation** on the Preservation and Conservation of the Documentary Heritages and the presentations were made by Dr. P. Perumal, Rtd. Conservator, Saraswati Mahal Library, Tanajvore, Tamilnadu on the Manuscripts and Papers, the Photographic Materials by Sri Seetharaimaiah, Sr. Photographic Officer, IGNCA and the Audio/Video Materials by Dr. G.S. Raina, Executive Producer, Media Center, IGNCA.

The UNESCO Cell, Kala Nidhi Division has sent the following three dossiers to the UNESCO for inscription on the Register of Memory of World, UNESCO, Paris for the year 2016-2018 in this programme:

i. *Maitreyavyakarana* (Prophetic Story of the Future Buddha), Asiatic Society, Kolkata.

ii. Gilgit Manuscripts (contain inter alia Sutras from the Buddhist canon, *Samadhirajasutra* and the *Saddharmapundarikasutra*-the Lotus Sutra), National Archives, New Delhi

International Dossier (Joint Nomination)

iii. The Archives of Non-Alignment Movement (NAM) Submit Meetings (1961-1992)- The collective memory of nine host countries.

Akhyan: Masks, Puppets and Picture Showmen in Indian Narrative Traditions

Dr. Kr. Sanjay Jha

The IGNCA exhibition *Akhyan*- *Masks, Puppets and Picture Showmen in Indian Narratives Traditions was held* at Vidhan Bhavan, Bhopal, Madhya Pradesh on 11-14, November 2016.

The exhibition was inaugurated by Hon'ble Chief Minister, MP in the gracious presence of Hon'ble Speaker, MP and Sri Dattatreyaji Hosabole, Sahsarkaryavah, Rastriya Swamsevak Sangh(RSS).

The exhibition was curated by IGNCA to be part of *Lokamanthan*, a Colloquium of Nation First Thinkers and practitioners, a discourse platform to share, brainstorm and perorate on contemporary issues of the country that not only influence individuals at home but also all around the world. The exhibition was viewed by MLAs and MPs, students, scholars and also by practitioners, intellectuals, theater persons and tribal artists.

The purpose of this exhibition has been to showcase the varied techniques of storytelling through Masks (both ritualistic and theatrical), Puppetry (glove, string, rod and shadow) and Picture showmen traditions (cloth, wood and paper etc). The exhibition was conceptualised by Dr. Molly Kaushal, Professor, Performance Studies, IGNCA, New Delhi. While these traditions do not brings forth a museum or Artesacts but showcase the living vibrant forms a storytelling in India. The reviews of the exhibition appeared in all leading newspapers of Madhya Pradesh. The exhibition was coordinated by Sri Rajendra Singh Taragi, Sr. Artist, Janpadasampada, IGNCA.

Dr. Kr. Sanjay Jha,
Deputy Archivist,
Coordinator (UNESCO Cell), Kala Nidhi
Nodal Officer, IGNCA-RC Puducherry, IGNCA

लोकगाथा उत्सव, चित्रकूट

- लक्ष्मी रावत,
समन्वयक - लोकगाथा उत्सव

मंदाकिनी नदी के किनारे पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थस्थलों में एक, चारों ओर से विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं और वनों से घिरा, अनेक आश्चर्यो की पहाड़ी के नाम से प्रसिद्ध, जहाँ भगवान राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ अपने वनवास के चौदह वर्षो में से ग्यारह वर्ष बिताए थे। जहाँ ऋषि अत्रि और सती अनसुइया ने ध्यान लगाया था। जहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने सती अनसुइया के घर जन्म लिया था उसी चित्रकूट धाम में दीनदयाल शोध संस्थान ने अपने संस्थापक श्रद्धेय नानाजी देशमुख की स्मृति में उनके जन्म शताब्दी वर्ष पर भारत सरकार, राज्य सरकार एवं ग्राम विकास से जुड़े विविध संगठनों की सहभागिता से देश की समृद्ध विरासत, प्रगति एवं विकास को दिखाने की एक कोशिश ग्रामोद्योग मेले के रूप में 24 फरवरी 2017 से 27 फरवरी 2017 के बीच करनी निश्चित की ।

11 अक्टूबर 1916 को महाराष्ट्र के हिंगोली जिले के एक छोटे से शहर कडोली में श्री अमृतराव देशमुख और राजबाई अमृतराव देशमुख के घर एक बेटा पैदा हुआ। चंडीकादास अमृतराव देशमुख जिन्हें नानाजी देशमुख के रूप में भी जाना जाता है। नानाजी का लंबा और घटनापूर्ण जीवन अभाव और संघर्षों में बीता उन्होंने छोटी उम्र में ही अपने माता–पिता को खो दिया। मामा ने उनका लालनपालन किया। नानाजी एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने सक्रिय रूप से विनोबा भावे द्वारा शुरू किए गए भूदान आंदोलन में भाग लिया और जय प्रकाश नारायण को पूरी तरह से समर्थन किया। उन्होंने खुद को पूरी तरह से सामाजिक और विकास कार्य के लिए समर्पित किया। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा की उनका योगदान भारत में महात्मा गांधी और विनोबा भावे और अन्य सामाजिक विचारक और कार्यकर्ताओं के समान है। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में काम किया जिसके लिए उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। नानाजी ने गोंडा (यू.पी.) और बीड (महाराष्ट्र) में बहुत से सामाजिक कार्य किया। उनकी परियोजना का आदर्श वाक्य थाः "हर हाथ को देंगे

काम हर खेत को देंगे पानी" उन्होंने भारत के पहले ग्रामीण विश्वविद्यालय की चित्रकूट में चित्रकूट ग्रामोदय विश्व विद्यालय के नाम से स्थापना की और इसके चांसलर के रूप में काम किया।

नानाजी ने बुंदेलखंड के 150 से अधिक गांवों के जीवन स्तर में सुधार के लिए अभिन्न मानववाद के दर्शन को लागू किया। 27 फरवरी 2010 को उनका निधन हो गया।

इस ग्रामोदय मेले में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र को भी भारत के परंपरागत कला को पुनर्जीवित करने का प्रस्ताव मिला। दीनदयाल शोध संस्थान की प्रार्थना पर इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने देशभर की चुनिंदा लोक नृत्यों को वहां प्रदर्शित करने का निश्चय किया। इस कार्यक्रम का नाम लोकगाथा उत्सव निष्चित किया गया और फिर शुरू हुआ लोक नृत्यों का चयन, ये सबसे कठिन काम था क्यूंकि इस तरह का कार्यक्रम चित्रकूट में पहली बार आयोजित हो रहा था, जो

कि मुख्य रूप से एक ग्रामीण क्षेत्र है। इसलिए कार्यक्रम की रूपरेखा वहां के लोगों को पसंद आनी बहुत जरुरी थी साथ ही लोकगाथा उत्सव ग्रामोद्योय मेले में रचा बसा भी लगना चाहिए था उससे अलग नहीं। काफी सूचियों के चयन के बाद लोक नृत्यों की अंतिम सूचि तैयार हुई जिसे सदस्य सचिव को स्वीकृति हेतु भेजा गया और उनकी स्वीकृति के बाद सभी नृत्यों दलों को संपर्क किया गया। जनवरी का माह ख़तम होने को था। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र को लोक कलाकारों द्वारा हमेशा सराहा गया है इसलिए जैसे ही उनके साथ सम्पर्क स्थपित हुआ सभी दलों ने आने की स्वीकृति दी और अपनी टिकट करवाने की तैयारी में जुट गए।

अंतिम सूचि तैयार हो गई थी, कलाकारों को सूचित कर दिया गया था। अब सबसे महत्पूर्ण काम, लोक उत्सव की रूपरेखा क्या होगी? मौली जी के अनुसार मंचीय कार्यक्रम के साथ झांकी जुलूस वहां के लोगों को ज्यादा पसंद आएगा और यह सुझाव सभी को पसंद आया। किन्तु कार्यक्रम इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के परिसर से ही नहीं बल्कि दिल्ली से भी बाहर था और चित्रकूट हमारे द्वारा कभी देखा नहीं गया था इसलिए कार्यक्रम से पहले हमने चित्रकूट जाने का निश्चय किया, जिससे हम लोग कलाकारों के रहने– खाने की व्यस्था के साथ–साथ कार्यक्रम का स्वरूप भी सुनिश्चित करलें। हम लोग 12 फरबरी की रात को निकले पड़े और 13 फरवरी की सुबह 7 बजे हम लोग चित्रकूट पहुँच गए, होटल के कमरे में पहुँच कर नहाधो कर सबसे पहले हमने नाष्ता किया। 9 बजे हमारी वहां के अलग–अलग अधिकारिओं के साथ बातचीत होनी थी सो मीटिंग के लिए निकले पड़े। मीटिंग ख़त्म करके भोजन करने के पश्चात चित्रकूट भम्रण के लिए निकले, दोपहर से रात 8 बजे तक हम लोग चित्रकूट घुमते रहे। 8.30 बजे होटल के कमरे में पहुंचे, हाथ मुँह धो सबसे पहले रात्रि भोज किया और फिर बैठ गए पुरे दिन के ब्योरे पर चर्चा करने। सफर की थकान और दिन भर की दौड़ भाग के कारण नींद आने लगी सो जल्दी सोने का निर्णय किया। दूसरे दिन 14 फरवरी को सुबह 7 बजे हमें गोपाल जी के घर पहुंचना था सुबह 6 बजे तैयार हो निकल पड़े गोपालजी से मिलने उनके घर, गोपालजी दीनदयाल संस्थान की तरफ से सांस्कृतिक सलाहकार थे, साथ ही काफी अनुभवी भी थे, उम्र करीब 65 के आसपास की रही होगी। गोपालजी की साथ चर्चा के दौरान हमने उन्हें अपने पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा समझाई जिसकी उन्होंने बड़ी तारीफ की यानी उन्हें हमारा पूरा कार्यक्रम पसंद आया और साथ ही वो थोड़े परेशान दिखे की क्या हम जो कह रहे है वो कर पायेंगे। गोपाल जी से बातचीत के बाद हम लोग रामघाट रवाना हुए। कल हमने झांकी जुलूस को यहीं से शुरू करने का सोचा था इसलिए एक बार फिर से उसे देखना चाहते थे। रामघाट के बाद हम पंचवटी आये हमारा दूसरा मंच यहाँ पंचवटी के घाट पर लगना तय हो गया। पहला और मुख्य मंच ग्रामोदय विश्व विद्यालय यानी ग्रामोदय मेले में था साथ ही मेले में एक अन्य मंच तय हुआ मुक्ताकाशी मंच, नाम के अनुसार खुले आकाश के नीचे खुला मंच। सब तय करके कलाकारों के रहने आदि की व्यस्था करने उनके आने जाने की सभी सुविधाएं देखने के बाद हम वापिस दिल्ली पहुंचे। सुबह 6 बजे घर पहुँच कर थोड़ा आराम करने के बाद हम दीनदयाल शोध संस्थान पहुंचे वहां हमारी मीटिंग अतुल जी, अभय जी एवं पुनीत जी के साथ थी। मीटिंग में हमे चित्रकूट में क्या क्या सहायता चाहिए उस बारे में बात हुई। 3 बजे हम वापिस कार्यालय पहुँच गए और प्रोफेसर मौली को रिपोर्टिंग की तथा कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा जो हम बना चुके थे जिसे हमने तीन भागों में बांटा था उनके सामने रखी। यद्यपि चार दिनों में सभी परंपराओं को एक साथ लाना मानव प्रयासों से परे है, इसलिए हमारा प्रयास था की उत्सव अलग–अलग लोक को प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिए जिसमे स्थानीय और पुराने भारतीय महाकाव्य एवं गाथागीत परंपराओं को प्रस्तुत किया जा सके।

237 कलाकारों के 16 दलों को लेकर हम लोग चल पड़े थे चित्रकूट की और जिनमे थे

1. **बधाई नृत्य, सागर, मध्यप्रदेश**– पुरुष एवं महिलाओं द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य पुत्र जन्म और विवाह आदि के मांगलिक अवसरों पर शीतला माता की आराधना में किया जाता है। यहाँ के लोगों की ऐसी मान्यता है कि प्राकृतिक आपदाओं से रक्षा शीतला देवी करती है। देवी के आवाहन के साथ इस नृत्य में नर्तक–नर्तकियाँ लोक वाद्यों की थाप पर वैविध्यपूर्ण पद संचालन के साथ इस नृत्य को करते हैं।
2. **राई नृत्य, बुंदेलखंड**– गुजरात के गरबा नृत्य के सामान होता है। विशेष वर्ग की महिलाएं (बेड़नियां) ही ये नृत्य करती है। विशेषतः लोक कवि ईसुरी की फागें गए जाती है। यदि स्त्री ना हों तो उनके भाव में स्त्री – वेशधारी पुरुष नाचते है।
3. **दीवारी नृत्य, बुन्देलखण्ड**– 'दिवारी' नामक लोक गीत के बाद नाचे जाने के कारण ही इसे 'दिवारी नृत्य' कहा जाता है। विशेषतः अहीर ग्वाले लोग इस नृत्य में भाग लेते हैं। ढोल–नगाड़े की टंकार के साथ पैरों में घुंघरू, कमर में पट्टा और हाथों में लाठियां ले बुन्देले जब इशारा होते ही जोशीले अंदाज में एक–दूसरे पर लाठी से प्रहार करते हैं, तो यह नज़ारा देख लोगों

का दिल दहल जाता है। ताबड़तोड़ लाठियां बरसने के बाद भी किसी को तनिक भी चोट नहीं आती। बुन्देलखंड की यह अनूठी लोक विधा 'मार्शल आर्ट' से किसी मायने में कम नहीं है।

4. **करमा गीत एंव करमा नृत्य, मध्य प्रदेश** –मनोरंजन के गीत––नृत्य है। इसके संदर्भ में करम देवता की बात कही जाती है कि कर्म देवता की पूजा के बाद गीत गाये जाते है और नृत्य किये जाते है। इसीलिए इसे करमा गीत नृत्य कहते है। आदिवासिओं का प्रमुख कर्म गीत है। दिनभर के थके हारे जब रात्रि में इकठ्ठे होते है उस समय इस गीत को गाकर, सामूहिक नृत्य कर अपनी थकान को उतारते है।

5. **हिलजात्रा, उत्तराखंड**– के पिथौरागढ़ में ही मनाया जाता है। यह शिव जी की बारात का एक रुप माना जा सकता है। इसमें लोग बैलों का मुखौटा लगाकर नृत्य करते हैं और यह लोग जोड़ियों में होते है और इनको हांकने के लिये एक हलिया भी होता है। कई जोड़ियां बनाई जाती हैं और सब मैदान में घुंम–घूम कर नृत्य करते हैं। कुछ बैल अकेले भी होते हैं, मुख्य रुप से दो बैल अकेले होते हैं एक मरकव्वा बल्द, जो सबको मारता फिरता है और सबसे तेज दौड़ता है, दूसरा होता है गाल्या बल्द, जो कि कामचोर होता है और बार–बार सो जाता है और उसका हलिया परेशान होता है। यह दोनों बल्द संस्कृति का प्रदर्शन करते हुये ग्रामीण हास्य को भी परिलक्षित करते हैं। हिल जात्रा में मुख्य आकर्षण होता है हिरन और लखिया भूत तथा महाकाली।

हिरन को पहाड़ी ड्रेगन भी कहा जा सकता है, अंत मे हिरन के आंग देवता भी आता है और यह कथानक समाप्त होता है। लखिया भूत सबसे प्रमुख होता है उन्हें शिव जी का एक गण वीरभद्र माना जाता है।

6. **राठोड वार्ता, गुजरात** – डुंगरी भीलों (आदिवासी) की मौखिक वीर कथा राठोड वार्ता, एक राठौर राजपूत, नायक–देव पाबु के कारनामों को लेकर है। वीर के शोशण की यह कहानी राजस्थान में सीमा के पार एक अलग संस्करण के रूप में है । राठोड वार्ता, डुंगरी भीलों के कबीले के बीच विद्यमान परिवार के भीतर मौत का बदला लेने की परंपरा की कहानी है । जिसमे डूंगरी भिल समुदाय का इतिहास, उसके मूल्यों, और अपने पिछले पूर्वजों के साथ साझा संबंधों को जिंदा रखने की कहानी है। सामुदायिक समारोहों में संगीत के साथ–साथ परंपरागत रूप से इसका प्रदर्शन किया जाता है।

7. **थोडा, हिमाचल प्रदेश** – में शिमला, सिरमौर और सोलन के जिलों में प्रचलित एक मार्शल आर्ट फॉर्म है। थोडा नृत्य नाटक में महाभारत की लड़ाई का आह्वान है। तीरंदाजी के कौशल की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। इस प्रकार थोडा धर्मयुद्ध, वीर रस और भावनाओं की विशेषता लिए हुए है।

8. **पांडवानी, छत्तीसगढ़** महाभारत या पांडव की कहानी को गाथागीत के रूप में वर्णन करते हैं, मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, उड़ीसा और आंध्र प्रदेश में बसे प्रधान और देवार समुदायों द्वारा गाया जाता है।

9. **बांस गीत, छत्तीसगढ़** लोक गीतों में बाँस गीत बहुत महत्वपूर्ण एक शैली है। यह बाँस का टुकड़ा करीब चार फुट लम्बा होता है अपनी विशेष धुन से लोगों को मोहित कर देता है। बाँस गीत में एक गायक होता है। उनके साथ दो बाँस बजाने वाले होते है। गायक के साथ और दो व्यक्ति होते है जिसे कहते है "रागी" और "डेही"। पहले वादक बाँस को बजाता है, और जँहा पर वह रुकता है अपनी साँस छोड़ता है, वही से दूसरा वादक उस स्वर को आगे बड़ाता है।

10. **पंथी नृत्य, छत्तीसगढ़** राज्य में बसे सतनामी समुदाय का प्रमुख नृत्य है। इस नृत्य से सम्बन्धित गीतों में मनुष्य जीवन की महत्ता के साथ आध्यात्मिक संदेश भी होता है, जिस पर निर्गुण भक्ति व दर्शन का गहरा प्रभाव है। कबीर, रैदास तथा दादू आदि संतों का वैराग्य–युक्त आध्यात्मिक संदेश भी इसमें पाया जाता है। यह द्रुत गति का नृत्य है, जिसमें नर्तक अपना शारीरिक कौशल और चपलता प्रदर्शित करते हैं।

11. **नाचा, छत्तीसगढ़** की सैकड़ों वर्षों पुरानी पारम्परिक लोक रंगमंच है। पुराने जमाने में नाचा ग्रामीण क्षेत्रों में जन–जागरण के साथ–साथ मनोरंजन का प्रमुख साधन होता था। नाचा के माध्यम से सामाजिक बुराईयों और कुरीतियों के खिलाफ जनमत तैयार करने का कार्य किया जाता था। नाचा के गीत, नृत्य तथा रोचक और उद्देश्यपूर्ण संवादों से आम जनता का मनोरंजन होता था। खुले आकाश के नीचे रातभर लोग नाचा मजा लेते थे।

12. **कुमरई गायन, हमीरपुर** पुरुष गाते है और महिलायें नृत्य करती है। नृत्य में पैर तथा हाथ की मुद्राएं बहुत ही शालीन तथा सधी हुई होती है। विशेष जातीय पर्वों में रात – रात भर कुमरई गायन होता है।

13. **रामनामी, छत्तीसगढ़** यह अपने पुरे शरीर में राम का नाम गुदवाते है। राम की पूजा करते है और प्रशंसा गाते हैं और राम का नाम लेकरनृत्य करते हैं। इनका मानना है की राम हिंदू परंपरा के श्रेष्ठ व्यक्ति है। उनके नाम की शक्ति पर उनका विश्वास है और रामचरित्रमानस द्वारा वचन देते हैं और कसम खाते है, रामचरित्रमानस एक ऐसा ग्रंथ जो कविता की आध्यात्मिक सुंदरता के साथ नैतिक मूल्यों को जोड़ता है। वे न मंदिर बनाते हैं और न ही मूर्ति पूजा करते हैं।

14. **कुंमाटिकल्ली (केरल)** प्रसिद्ध रंगीन मुखौटा–नृत्य और भक्ति कला रूप है, जो त्रिशूर जिले में प्रचलित है ओणम त्यौहार के दौरान इन नर्तकियों को घर से घर जाने के दौरान गुड़, चावल या नकदी मिलती है। नर्तक 'कुममतलिकली' नामक अवशिष्ट कृषि उत्पादों की लंबी छड़ें रखती हैं और उन्हें हेरफेर करते हैं। उनका नृत्य शैव मिथ से संबंधित है यह नृत्य एक क्षेत्रीय भगवान और देवी और कई जादुई कलाओं के सम्मान में किया जाता है।

15. **कालीअट्टम, मोर नृत्य, पोइकल कुतिरई अट्टम, करगट्टम (तमिलनाडु)** काली की के रूप को पूजा जाता है इसलिए इसे कालीअट्टम के नाम से जाना जाता है। काली एवं महिसासुर के मुखोटे पहन ये नृत्य किया जाता है जिसमे माँ काली दुष्टों को मारती है।

15.1 **मोर नृत्य** यह नृत्य भगवान कृष्ण द्वारा मोर का सम्मान भी दिखाता है।

15.2 **पोइकल कुतिरई अट्टम** (डमी हॉर्स डांस) है जहां नर्तक एक घोड़े के शरीर को अपने कूल्हों पर रखता है। लकड़ी के पैर जो घोड़े की खुरों की तरह लगते हैं। नर्तक एक तलवार या एक कोड़ा लेकर नृत्य करता है। यह लोक नृत्य अम्मान मंदिर त्योहारों की पूजा करने के लिए किया जाता है।

15.3 **करगट्टम** एक तमिल लोक नृत्य है जो नर्तकियों के सिर पर मिट्टी या धातु के बर्तनों या अन्य वस्तुओं के संतुलन को समाहित करता है। यह नृत्य आमतौर पर अम्मान की पूजा के साथ जुड़ा हुआ है

16. **पुलीकली (केरल)** की एक लोक कला का रूप है। पुली मतलब बाघ कली मतलब खेलना अर्थात पुलीकली का शाब्दिक अर्थ 'बाघों का खेल' है। पुलीकली को कंडुवाकली के नाम से भी जाना जाता है, जिसमें कलाकार खुद को पीला, लाल और काले रंग की बाघ धारियों के साथ चित्रित करते हैं, और थक्किल, उडुकू और चन्दा जैसे पारंपरिक टकराव उपकरणों के ताल में नृत्य करते हैं।

24 फरवरी 2017 की सुबह जब चित्रकूटवासी आनंद और आश्चर्य के सरोवर में डूब गए, कई सौ कण्ठों की गूँज ने पूरे चित्रकूट को सुरों के रंग में रंग दिया था, हर एक कदम दौड़ पड़े थे रामघाट की ओर, और मन्त्र मुग्ध हो गई थे, अलग अलग राज्यों के अनदेखे रूपों को अपने ही घर पर देख कर। जहां राममनामियों के राम भजन मन को शांत कर रहे थे तो वहीँ पंथी नृत्य की ऊर्जा उन्हें शक्ति दे रही थी। कोई बाघ के रूप में रंगे पुलीकली (केरल) के कलाकारों को छूने के लिए बेसब्र हो रहा था तो कोई कुमाट्टीकली के मुखौटे देखकर रोमांचित हो रहा था। सब हैरान थे ये जानकर की भारत के इस लोक रूप को वो आज तक क्यों नहीं देख पाये। उत्तराखंड का हिलजात्रा और तमिलनाडु का कलीअट्टम तो धार्मिक नगरी चित्रकूट के लोगों के मन में ऐसा बसा जैसे उनके भगवान साक्षात् उनके सामने प्रकट हो उठें हों हर कोई उनके आशीर्वाद से अपने को धन्य करना चाहता था।

तभी एक जोर के गर्जना हुई सारी निगाहें उस तरफ उठ गई। सफ़ेद कपड़ों में सुसज्जित भारी चमड़े के जुते पहन हाथ में धनुष बाण लिए एक दूसरे को लड़ाई के लिए ललकारते थोड़ा (हिमाचल प्रदेश) के कलाकारों की हुंकार ने जैसे आसमान तक को हिला दिया था, और तभी आ पहुंचे बधाई गाते और नाचते सागर (मध्य प्रदेश) के कलाकार हवा में थालियां और

चक्का घुमाते। कहीं दीवारी नृत्य के कलाकार लाठियों से अपने कसरती शरीर के साथ एक दूसरे को दावं लगाने को दो दो हाथ करने को उत्साहित कर रहे थे तो कहीं पंडवानी के सुर श्रोताओं को अपने संग रामायण के काल में ले गये, नाचा (छत्तीसगढ़) के प्रति लोगों की दीवानगी देखने लायक थी। कुमरई के गीत और कर्मा के आदिवासी सब लोगों के मन को भा रहे थे। कहीं बांस गीत के कलाकारों की बांसुरी दूर से अहसास करवाती लगता जैसे कह रही हो हम यहाँ है तुम कहाँ हो ?

प्रतिदिन सुबहः झांकी जुलूस निकला जाता फिर दिन भर मुख्या मंच पर कार्यक्रम होते। दिन के भोजन के उपरांत कलाकार फिर शुरू हो जाते। थक कर निढाल होने पर जब हम उन्हें कहती थोड़ा आराम करलो तो उनके शब्द होते "मैडम जी आज कल के बच्चें अपनी परम्पराओं को भूल रहे है ऐसे मौके कम मिलते है जब वो हमसे मिल पाते है हमारे और हमारी कलाओं को जान पाते है ऐसे मौके को गवां दें नहीं मैडम जी हम नहीं थके" शाम 5 बजे फिर झांकी जुलूस निकलता। चित्रकूट के लोगों ने समय नोट कर लिया था झांकी जुलूस का क्यूंकि उसे वो छोड़ना नहीं चाहते थे। फिर 6 बजे से रात 9 बजे तक फिर शुरू हो जाता मुख्या मंच और मुक्ताकाशी मंच पर कलाकारों का मेला।

यह कार्यक्रम भारतीय राश्ट्र के निर्माण में आदिवासी संस्कृति के महत्व को सामने लाया। स्कूल और कॉलेजों के बच्चों ने बड़े पैमाने पर भारत भर के लोक–जनजातीय कलाकारों और उनके समुदायों का परिचय पाया। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल से आए छात्र तो जैसे ही समय मिलता किसी न किसी कलाकार को लेकर उनके बारे में जानने की कोशिश शुरू कर देते और हम सोचते यही तो चाहते थे हम की आज का युवा अपनी इस समृद्ध और विविधतापूर्ण विरासत को जाने पहचाने।

लोकगाथा उत्सव से केंद्र को करीब 2000 हाई रेजुलेशन क्वालिटी फोटोग्राफ्स एवं 1000GB ऑडियो–वीडियो डॉक्यूमेंटेशन प्राप्त हुई। साथ ही हिन्दुस्तान की कई बड़ी हस्तियों ने कार्यक्रम को देख कर उसे पसंद किया जिनमे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघचालक डा0 मोहन भागवतजी, मोहन भगवत जी तो सभी कलाकारों से व्यक्तिगत रूप से मिले भी जो सभी कलाकारों के लिए एक सम्मान था।

केन्द्रीय मंत्री राधामोहन सिंह, उमा भारती, नरेन्द्र सिंह तोमर, थावरचन्द्र गहलोत, राजीव प्रताप रूढ़ी, गिरिराज सिंह, फग्गन सिंह कुलस्ते के अतिरिक्त आंठ राज्यों के ग्रामीण विकास मंत्री तथा पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय के राज्यमंत्री, सहित मंत्री राजेन्द्र शुक्ला के साथ–साथ श्रीमती मृदुला सिन्हा (राज्यपाल

गोवा), श्रीरामनाथ कोविद (राज्यपाल बिहार), श्री कप्तान सिंह सोलंकी (राज्यपाल हरियाणा), श्री विनय सहस्त्र बुद्धे उपाध्यक्ष एवं प्रभारी मध्यप्रदेश (भा0ज0पा0) आदि ने शिरकत की महिला एवं बालविकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनीस जी ने तो प्रार्थना भी की, की इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र भविष्य में मध्यप्रदेश इस तरह के और भी कार्यक्रम करें वो हर संभव सहायता करेंगी।

हम यह यकीन और खुशी के साथ यह कह सकते है की लोकगाथा उत्सव इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र की एक बड़ी सफलता थी। इस लोकगाथा उत्सव के संयोजन ने ग्रामोद्योग मेले की भव्यता को बढ़ा दिया था। चित्रकूट के लोगों के अनुसार इस तरह के कार्यक्रमों की वहां और वहां जैसे अन्य छोटे शहरों में बहुत आवश्यकता है। चित्रकूट का हर एक व्यक्ति अपने कैमरों में मोबाइल पर जैसे संभव हो इस उत्सव को कैद करना चाहता था इस डर से की फिर ना जाने कब उन्हें अपनी जिंदगी में यह देखना संभव हो पाएगा? 24 से 27 तारीख तक प्रतिदिन चलने वाले इस उत्सव में शहर के लोगों द्वारा विभिन्न स्थानों पर कलाकारों के जीवंत और रंगीन प्रदर्शनों का आनंद लिया गया था और हमें पूरा यकीन है कि बहुत समय तक ये उत्सव चित्रकूट के लोगों के मन और दिमाग में रहेगा ।

Theatre, Art & Craft and Photography workshop for children

Back Cover:
Golden Womb Series: A Celebration, by Seema Kohli. Acrylics and Ink on Canvas with 24ct Gold and Silver leaf.

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS, NEW DELHI

Printed and Published by
Member Secretary, IGNCA on behalf of
Indira Gandhi National Centre for the Arts,
C.V. Mess Building, Janpath, New Delhi 110 001.

R.No. 62032/93